ये वर्ष बुद्धि की शुद्धि के लिए...

ठण्डे प्रदेश में ऊँचे पहाड़ पर एक देव मंदिर था। एक व्यक्ति नियमित रूप से मंदिर में देवी-देवताओं के दर्शन हेतु जाता था। पुजारी निर्धारित समय पर मंदिर के द्वार खोलता और बंद करता।

वो व्यक्ति दर्शनार्थ भावनाशील था। देव दर्शन न हो तो भोजन भी नहीं करता था।

एक बार वर्ष के आखिरी दिन 31 दिसम्बर को वो दर्शन करने निकला तो अकस्मात ही उसके पैर में चोट लग गई। सड़क के किनारे पर दो-तीन घण्टा बैठा रहा। पीड़ा से राहत मिलने पर धीरे-धीरे लंगड़ाते हुए चलकर वो देव मंदिर की जगह पर पहुँचा। ऐसे में उसे पुजारी मिला। पुजारी ने कहा: 'आप लेट हो गये। द्वार बंद हो गया, अब कल खुलेगा।' - ये कहकर पुजारी चला गया।

- ब्र.कु. गंगाधर

उस व्यक्ति ने विचार किया, 'आज वर्ष के अंतिम दिन आने वाले कल, नये वर्ष का उदय होगा। मैं बासी रहकर नये वर्ष का स्वाद कैसे चख सकूंगा? मैं पूरी रात यहीं तलहटी में पड़ा रहूंगा। भले ही ठण्डी से मेरी काया कांपती रहे।'

वो व्यक्ति सड़क के किनारे ऐसे ही पड़ा रहा।

आध्यात्मिकता का अर्थ केवल देव-दर्शन? एक तरफ तो विशाल अर्थ में कहा गया है, कि कण कण में, जन-जन में और प्राणी मात्र में ईश्वर है। तो फिर सेवा बड़ी या देव मूर्ति बड़ी? यह अंतर की आवाज़ उस व्यक्ति को सुनाई दी और वो मंदिर को दूर से ही नमस्कार कर अपने घर वापिस चला गया। नव वर्ष को उसने हॉस्पिटल में बीमार लोगों एवं भूखे-तर्से लोगों के साथ बिताया।

समय के प्रवाह में कोई पुराना नहीं कोई नया नहीं। नया वर्ष याचक बनकर जीने के लिए नहीं है, बल्कि परमात्मा के सपूत पुत्र बनकर जीने के लिए है। नया वर्ष बुद्धि की वृद्धि के लिए नहीं, बल्कि बुद्धि की शुद्धि के लिए है। नये वर्ष को मनुष्य बीते हुए वर्ष में ईश्वर कृपा से मिले हुए सुख का स्मरण कृतज्ञ भाव से करने के बदले अपनी मांग की सूचि और अपेक्षाओं की लम्बी लिस्ट परमात्मा के सामने रखता है। लेकिन ईश्वर को दम्भ व कपट बिल्कुल नहीं भाता। ईश्वर आपको जिताने का काम भी नहीं करता, और ना हराने में ही रस लेता। ईश्वर को तो एक ही अपेक्षा है कि मनुष्य के रूप में मेरी संतानें श्रेष्ठ बनें और अपने भाई, परिवार तथा लोगों की आदि व्याधि उपाधि में मदद रूप बनें।

एक व्यक्ति हमेशा एक मजदूर को अपने साथ रख चलता था। एक दिन उसने एक मजदूर से एक पोटली उठाने का भाव पूछा। मजदूर ने कहा: 'काम की वस्तु है तो उसे मुफ्त में उठाऊंगा, व्यर्थ की वस्तु को उठाने का भाव सौ रुपया।'

'अरे, इस पोटली में तो मेरी खास-खास वस्तुएँ हैं। तुझे निरर्थक लगती वस्तुएँ मुझे सम्भालने जैसी लगती हैं।' - व्यक्ति ने कहा।

'माफ करना साहब, आप लोग लोभ, लालच, मोह, स्वार्थ की पोटलियों को आवश्यक समझते हो। लोगों के लाभ और लोभ की पोटली उठाकर मैं थक गया हूँ...। अब मुझे 'कुली' नहीं रहना है, कुलवान बनना है। मैं दु:खों की खेती करूंगा, लेकिन स्वार्थ की पोटली लेकर घूमते हुए व्यक्ति का भार नहीं उठाऊंगा...।' - यह कहकर मजदूर चला गया।

प्रश्न यह है कि नव वर्ष के साथ मानवता की भावनाओं का सम्बन्ध रखना है या मांगने का? नया वर्ष मांगता है सेवा भावी लोभ रहित डॉक्टर, कर्मयोगी शिक्षक, अश्लील का भी भला करने वाला एडवोकेट, धर्म की मौज मनाने वाला नहीं बल्कि ईश्वर की लाज रखने वाला धर्मगुरू, समदृष्टि रखने वाला मुल्ला-मानव और सत्ता

- शेष पेज 7 पर...

दु:ख की महसूसता से दूर रह, अतीन्द्रिय सुख के आदती बनो

बाबा कहता है मेरे समान बनो। तो अलौकिकता, दिव्यता हमारे चेहरे, चलन, संस्कार-स्वभाव में आ जाये। साक्षी होकर अपने को भी और औरों को भी देखें। मन को बिल्कुल सद्भावना युक्त बना लो। उसका सही अर्थ हमारे स्वरूप से प्रकट हो। आन्तरिक भावना अंग संग रहने वालों के प्रति बड़ी शुद्ध हो। दूर रहने वालों के लिए तो शुद्ध रह सकती है, लेकिन जो साथ में रहता, उनके लिए भी शुद्ध हो। किसी का हमारे प्रति रिस्पेक्ट हो या न हो, हमारी भावना उनके प्रति शुद्ध हो। हम अपने भाव को अन्दर से स्पष्ट, साफ, दिव्य बनाते जायें, अपने आप समय आयेगा, लोग पहचानेंगे। इसमें अपने आपको धैर्यवत, गम्भीर और सयाना बनाना होगा।

बाबा ने अव्यक्त होते यह मीठे शब्द कहे जो भूलते नहीं हैं- बच्चे, ज्ञान दान के साथ-साथ गुण दान करो। इसमें दिल बड़ी रखनी चाहिए। पहले हमारे में अवगुण ही थे, गुण आये कहाँ से? सीखने की भावना ने बड़ी कमाल की है। सिखाना आसान है। सीखना भी आसान है। सिखाना है तो अपने स्वरूप से सिखाना है। सीखने की भावना गुणवान बनाती है। भगवान की यह इच्छा है कि हरेक भाग्यवान बन जायें।

दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

हम नहीं बनेंगे तो कौन बनेंगे? बाबा भी कहता है, समय भी कहता है, बनना ही होगा। दोनों कान से दोनों आवाज़ सुनाई पड़ रही है। तीसरा कोई आवाज़ सुनाई नहीं पड़ता। बाबा ने यह स्लोगन दे दिया है, समय, श्वास सब कुछ सफल करो। सफल करते हैं तो हमें देख और करते हैं, तो हमारा भाग्य बन जाता है। फिर सफलता देख खुश होते हैं। हरेक को खुश देख सब खुश होते हैं। खुश रहने के लिए कोई मेहनत नहीं करनी पड़ती है। दु:ख महसूस करो तो टाइम वेस्ट जाता है। दु:ख की छोटी सी घड़ी भी बहुत लम्बी लगती है। ऐसी घटना आने ही नहीं दो। कभी भी किसी बात का दु:ख महसूस न हो। वह हमारे लिए बहुत बड़ी भोगना महसूस होती है। इससे हमें अपने आप को जल्दी से सम्भालकर, खबरदार रहना है। अतीन्द्रिय सुख के आदती बन जाओ। दु:ख महसूस करना यह पुरानी आदत है। हम जितना आगे बढ़ते जा रहे हैं, तो यह हमारे मुख पर शोभता नहीं है। ज़रा सी लैस भी नहीं आ सकती। निमित्त मात्र बाहर हैं, बाकी अन्दर हैं। अन्दर की दुनिया कितनी अच्छी है! ब्राह्मणों की दुनिया भी भिन्न है। मैं उस चक्कर में क्यों आऊँ? अन्दर की दुनिया रचने की ड्युटी बाबा ने दी है। स्वदर्शन चक्र फिराना पहले मेहनत का काम था। अब कितना सहज है, हमारे अन्दर जो होगा वह बाहर साक्षात्कार होगा। मेरे अन्दर में क्या है? एक बाबा है, दूसरा मैं हूँ, तीसरा बाहर से किसी को आने नहीं देते हैं। सेवा अर्थ पार्ट बजा रहे हैं। सब नैचुरल होता जाये। कभी न कभी कोई न कोई ऐसी बात अपनी स्व-उन्नति के लिए मिल जाती है जिसे धारण कर लो तो छोटी-छोटी बातें स्वत: खत्म हो जाती हैं।

सीट पर सेट, तो नहीं होंगे अपसेट

मीठे बाबा ने समय का इशारा देते हुए कहा है कि अभी मन्सा सेवा की बहुत-बहुत आवश्यकता है, क्योंकि दुनिया में चारो ओर देखो चाहे देश में, चाहे विदेश में, कितने भी धनवान हों, कितने भी एज्युकेटेड हों.... लेकिन भविष्य का भय है कि आखिर क्या होने वाला है! और हम बेफिकर बादशाह हैं, क्योंकि हमें बाबा ने सुना दिया है, दुनिया वालों को तो बहुत बुरा-बुरा दिखाई दे रहा है... हम कहते हैं इस बुराई में भी अच्छाई समाई हुई है। दुनिया वाले तो बिचारे निराश हो गये हैं कि पता नहीं क्या होगा! लेकिन यह जो गिरावट हो रही है, समय प्रमाण यह बुराई अति में जानी ही है। जब स्थापना हुई थी, उस समय ही बाबा ने यह स्लोगन सुनाया था कि किसकी दबी रही धूल में, किसकी राजा खाए... और सफल उसकी होगी जो धनी के नाम लगाए..। उस समय इतनी यह अति की हालतें नहीं थीं। तो हम लोग बाबा को कहते थे कि बाबा ऐसा भ्रष्टाचार तो दिखाई नहीं दे रहा है। तो बाबा कहते थे, आगे चलते चलो, आगे देखो क्या होता है? लेकिन अभी तो जो बाबा ने कहा वो प्रैक्टिकल सोचने से भी ज़्यादा है। जो नहीं सोचो वो हो रहा है। कोई भी डिपार्टमेंट पापाचार, भ्रष्टाचार से सेफ नहीं रहा है। अभी तो खुले अखबारों में भ्रष्टाचार का नाम आ रहा है। खुला बाज़ार है, छिपा हुआ नहीं है। तो यह सब देखकर हमको डर नहीं लगता या दु:ख नहीं होता, क्योंकि हम भविष्य के राज़ को जानते हैं कि यह अति में जाकर अन्त होगा, फिर उस राज्य की आदि होगी। नियम है ना, 12 के बाद ए.एम. ऑटोमेटिक शुरु हो जाता है। तो अति के बाद अन्त है और अन्त के बाद है आदि। उस आदि में फिर हमारा राज्य होगा। इसलिए हमको फिकर नहीं लगता है कि क्या होगा। जो होना था वही हो रहा है। इसलिए बाबा मुरली में कहते हैं - मिरूआ मौत मलूका शिकार...। जो भी बाबा का बच्चा बना है, कोई भले माया के, विघ्नों के चक्कर में आ करके ढ़ीले भी हो गये हों, लेकिन जिसने कहा मेरा बाबा, माना उसके पास स्वर्ग की चाबी है ही। तो हम सभी को गेट पास की तो कोई चिंता नहीं है, लेकिन सीट कौन सी लेनी है? जो संगमयुग पर सीट पर सेट होगा, कभी अपसेट नहीं होगा, उसी को अच्छी सीट मिलेगी। सीट पर सेट नहीं है तो अपसेट है। हम ब्राह्मण हैं तो एक अकालतख्त, दूसरा बाबा का दिलतख्त और तीसरा भविष्य राज्य तख्त मिलना ही है। यह तीन तख्त बाबा ने हम सबको दिया है जो सारे कल्प में ऐसा कोई को नहीं मिलेगा। बाबा ने एक साथ तीन तख्त दिये हैं, तो कभी किस तख्त पर बैठो, कभी किस तख्त पर बैठो। तो बाबा ने भी हमें देखो कहाँ-कहाँ से ढूंढ़ के निकाला है, खुद भगवान ने हमको ढूंढ़ा। लोग तो बिचारे भगवान को अभी तक भी ढूंढ़ रहे हैं और हमें भगवान ने ढूंढ़ा है। तो हमें कितना नशा है! तो बाबा कहते नशे की इतनी बातें बता दी हैं आपको, स्वमान की लिस्ट देखो और उसी में स्थित रहो।

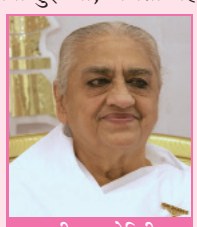
दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

चेक करें, बाप समान कहाँ तक बने?

बाप से प्यार सभी का है, लेकिन बाप समान बनना माना जैसे शिव बाप निराकार है और ब्रह्मा बाप ने भी अपने को आकारी से निराकारी बनाया, ऐसे हम भी फॉलो कर समान बनें। इसके लिए एकान्त में विशेष टाइम देकर निराकारी स्थिति में रहने का अभ्यास करने की ज़रूरत है। कई कहते हैं हम तो बाबा के हो गये, हमें तो बाबा सदा ही याद है। लेकिन यह कोई याद की यात्रा नहीं है। हो गए यह नशा ठीक है पर याद की यात्रा में रहने के लिए हमें विशेष सूक्ष्म ते सूक्ष्म अपनी बीजरूप स्थिति में रहने की मेहनत करनी है। बीजरूप स्थिति माना जिसमें कोई दूसरे संकल्प-विकल्प न हों। अशरीरी हो जाएं, एकदम सूक्ष्म निराकारी बन जायें। बीज में सब समाया रहता है। योग में भिन्न-भिन्न पुरूषार्थ करते हैं कि बाबा से रूहरिहान करें, मनन-चिन्तन करें, यह भी अच्छी बात है, लेकिन साथ-साथ अपनी ऊँची स्थिति बनाने का लक्ष्य रखना है, जो खुद को यह अनुभव हो कि बाबा के याद की इतनी मुझे शक्ति है जो इस याद में रहने से जो मेरे 63 जन्मों के विकर्मों का खाता क्लीयर, क्लीन हो रहा है। अपना चार्ट देखो कि मैं कर्मातीत स्थिति के कितने समीप हूँ? आज मैं इस चोले को बदलूं तो कितना क्लीयर, क्लीन हिसाब है, या अभी तक कोई दाग है? दाग होगा तो कर्मातीत कैसे बनेंगे? हमें अपनी स्थिति का चार्ट चेक करना है-कि कौन सा दाग अभी रहा हुआ है? जब समय की गति इतनी तेज़ जा रही है तो समय की गति अनुसार हमारे पुरूषार्थ की गति इतनी तेज़ जा रही है? इस स्थिति में रहने से जो पुराने संस्कार हैं, कमियाँ हैं, वह सहज परिवर्तन हो जाते हैं। एक है संस्कार को मिटाने की मेहनत करना, एक है नैचुरल स्थिति बनाना जिससे कि ये संस्कार सहज परिवर्तन हो जायें। हम ओरिजनल अपनी स्टेज पर आ जायें। मुझे अपनी स्थिति नैचुरल करनी है या मेहनत में ही गंवानी है? मेहनत है, पुरूषार्थ है कि मैं अपने को देखूँ। मैं बाबा समान कहाँ तक बनी हूँ? ब्रह्मा बाबा बाप समान फरिश्ता निराकारी बन गये। मुझे ब्रह्मा बाबा समान फरिश्ता कर्मातीत बनना है। एक स्थिति है कि मैं अपने को प्यारा और न्यारा बनाऊँ। परन्तु एक है इससे भी परे की स्थिति। हम ऐसे अनुभव करें जो पिछले जन्मों का कड़ा हिसाब है, वह हमारे चार्ट में न हो। यह भी रिमार्क कोई न दे कि क्या करें यह मेरा कड़ा हिसाब है, कड़ी आदत है, कड़ा स्वभाव है। अगर हम ऐसा जवाब देते रहेंगे तो बाप समान कब बनेंगे? हरेक ऐसा दृढ़ संकल्प करे कि इस भाषा को परिवर्तन करेंगे। मेरे कड़े संस्कार हैं, नहीं, मेरे बहुत मीठे संस्कार हैं-यह भाषा हो। तब कहेंगे सहज योगी।

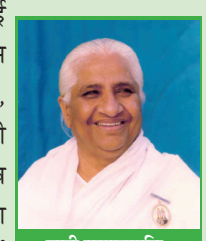
दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका